Gyanvividha, Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026 : PP-327-335

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-1 (Jan.-March) 2026
Page No.- 327-335
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

1. दीपेन्द्र कुमार
पीएच.डी. शोधार्थी, मणिपुर अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, मणिपुर-795140 (इंफाल).

2. प्रो. टी. कमलाबती देवी
शोध निर्देशिका एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, मणिपुर अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, मणिपुर-795140, इंफाल.

Corresponding Author :

दीपेन्द्र कुमार
पीएच.डी. शोधार्थी, मणिपुर अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, मणिपुर-795140 (इंफाल).

दक्षिण भारत का अद्भुत ग्रंथ 'राघवयादवीयम्' (राम-कृष्ण की मिश्रित भक्ति रचना के विशेष संदर्भ में)

सारांश-भारतीय ज्ञान परंपरा में भक्ति की रचनाओं का एक विशाल भंडार साहित्य आज मौजूद है। भगवान श्रीराम एवं भगवान श्रीकृष्ण की परंपरागत रचनाएँ सदैव से रचनाकारों द्वारा उपलब्ध की जाती रही हैं। वाल्मीकि रामायण से पूर्व से ही श्रीराम के प्रति आस्था एवं भक्ति के ज्ञान का प्रवाह निरंतर प्रवाहित हो रहा है। रामकाव्य साहित्य से कृष्ण कथा साहित्य तक के तमाम व अनगिनत रचना ग्रंथों का निर्माण ऋषि, मुनि आदि रचनाकारों के सानिध्य से विभिन्न भाषाओं में होती रही हैं। इन्हीं रचनाओं में से एक विशेष रचना ग्रंथ है 'राघवयादवीयम्'। भक्ति प्रधान ग्रंथ 'राघवयादवीयम्' भगवान श्रीराम एवं भगवान श्रीकृष्ण की संयुक्त भक्ति में समर्पित एक अनूठी रचना है। इस रचना की खास बात यह है कि इसके श्लोकों को यदि सीधा पढ़ा जाता है तो इसमें रामायण की कथा का सत्संग मिलता है, वहीं इसके श्लोकों को उल्टा पढ़ा जाता है तो भगवान श्रीकृष्ण की भागवत कथा का ज्ञान। इन्हीं विशेषताओं के कारण इस विचित्र रचना को 'अनुलोम-विलोम काव्य' भी कहा जाता है।

बीज शब्द-भगवान, मनोभाषिक, रचना, भक्ति, राम, कृष्ण, मनोभाषिक, रचना, ग्रंथ, साहित्य, श्लोक, अनलाम-विलोम, काव्य।

आलेख-भारतीय ज्ञान परंपरा में भक्ति और आस्था के प्रभाव का ज्ञान सनातन परंपरा में वेदों के माध्यम से सदैव से आधारभूत रहा है। भक्ति साहित्य में ज्ञान परंपरा के अथाह सागर में धर्म, आस्था, ज्ञान और समर्पण की मिश्रित भक्ति से युक्त मनोभाषिक भावना की बेजोड़ उदाहरण वाली

एक ऐसी रचना आज उपलब्ध है जिसमें भगवान श्री राम और भगवान श्री कृष्ण की संयुक्त भक्ति को दर्पण की भाँति रचना कर प्रस्तुत किया गया है। भक्ति साहित्य में इस अमूल्य निधि व रचना मणि को 'राघवयादवीयम्' नाम से ख्याति प्राप्त है। हिंदू धर्म में आस्था एवं भक्ति की परिचायिका इस रचना में जहाँ भगवान के प्रति रचनाकार की भक्ति का समर्पण प्रदर्शित होता है, तो वहीं राम-कृष्ण के प्रति अपनी मनोभाषिक श्रद्धा भावना का स्पष्ट प्रतिबिंब दिखाई देता है। 'राघवयादवीयम्' ग्रंथ में रचनाकार ने भगवान श्रीराम एवं श्रीकृष्ण को ईश्वर के रूप में पहचान देते हुए सिक्के के दो पहलू के रूप में प्रस्तुत कर अपनी मनोभाषिक आस्था का विशेष उदाहरण प्रस्तुत किया है।

सामान्य रूप में यदि कहा जाए कि ऐसे शब्दों को एकत्रित करो जिसमें उल्टे व सीधे शब्दों के अर्थ निकलते हों, तो काफी परिश्रम के बाद कठिनता से ऐसे शब्दों व वाक्यों का निर्माण संभव को सकेगा। यहाँ तमिलनाडु राज्य के जिला कांचीपुरम के 17वीं शती के कवि वेंकटाध्वरि द्वारा रचित एक संस्कृत स्त्रोत्र के रूप में रचित 'राघवयादवीयम्' एक अद्भुत ग्रन्थ प्राप्त होता है। भक्ति साहित्य के इस विचित्र 'राघवयादवीयम्' नामक संस्कृत भाषा ग्रंथ को उल्टा-सीधा पढ़ने की उपलब्धि होने के कारण इसे 'अनुलोम-विलोम काव्य' भी कहा जाता है। दक्षिण भारत के कवि वेंकटाध्वरि द्वारा जिस विरक्त भक्ति भाव से 'राघवयादवीयम्' नाम के इस ग्रंथ सी रचना की है, उसमें इसके सीधे पढ़ने से रामकथा के दर्शन होते हैं तो उल्टा पढ़ने से भगवान कृष्ण की कथा का अवसर मिलता है। कवि द्वारा एक ही ग्रंथ में भगवान श्रीराम और भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति जिस प्रकार से संयुक्त भावना को समाहित किया है, उससे रचनाकार की मनोभाषिकता तो स्पष्ट होती ही है। साथ ही उससे कवि की भक्ति एवं आस्था की गहराई का भी आभास होता है। इस रचना द्वारा समझा जा सकता है कि कवि द्वारा भक्ति सागर की गहराई उतरकर मनन चिंतन के जो गोते लगाये और गहन साधना की है उसी की परिणिति से 'राघवयादवीयम्' नामक माणिक मोती की रचना को अवतरित किया जाना संभव हो सका है। सामान्य रूप में एक ओर से देखा जाए तो यह भक्ति ग्रंथ मात्र तीस श्लोकों में सिमट जाता है, और राम भक्ति को दर्शाता, किंतु दूसरी ओर से उल्टा पढ़ा जाए तो यह पुनः तीस श्लोकों में प्रस्तुत हो जाता है, जिसमें कृष्ण भक्ति का रसास्वादन किया जा सकता है, इस प्रकार दोनों ओर से यह ग्रंथ कुल साठ आलेखों की एक छोटी सी अद्भुत रचना है, जो कवि की प्रतिभा की आश्चर्यचकित करने वाली कृति है।

भारत के अवध क्षेत्र में जहाँ भगवान श्रीराम को भक्ति प्रधानता की प्रचुरता ने सबको राममय किया है, तो वहीं ब्रजक्षेत्र में भगवान श्री कृष्ण बाल लीलाओं व राधा रानी प्रेमकथा ने श्री कृष्ण की भक्तिरस को अमरत्व के रूप में भक्तों के हृदय में समाहित किया है। सनातन धर्म में भगवान श्रीराम और भगवान श्री कृष्ण दोनों ही भगवान विष्णु के अवतार माने जाते हैं। इसी कारण राम और कृष्ण की भक्ति को एक ही ईश्वर को दो अवतारों के रूप में मान्यता के साथ पूजा जाता है और इसीलिए राम और कृष्ण की भक्ति में समाधिकार दृष्टि से मान्यता प्रदान की जाती है। दुनिया भर के हिंदुओं में राम भक्ति में जय श्री राम, राम-राम प्रचलित व पूज्य हैं दो वहीं कृष्ण भक्ति में जय श्री कृष्ण व राधे-राधे का बोलवाला है। ब्रज क्षेत्र की बात की जाए तो राधा रानी को कृष्ण से जोड़कर जय श्री राधे-कृष्णा अधिक चलन में है।

संपूर्ण भारत वर्ष एवं विदेशी धरा पर हिंदुओं के धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन निरंतर व अक्सर जगह-जगह होता रहता है। जिनमें हिंदू देवी-देवताओं की स्तुति का गायन व मंचन किया जाता है। ऐसे ही भजनों में मैंने राम और कृष्ण की संयुक्त भक्ति का भजन एक कार्यक्रम में महिलाओं द्वारा सुना था, पूरा गाना तो याद नहीं है, किंतु उसकी पहली पंक्ति मुझे आज भी याद है जो इस प्रकार से है-

चाहे राम कहो, चाहे कृष्ण कहो...।
दोनों का मतलब एक ही है...।।

बाद में यह भजन मैंने मंदिरों व कीर्तनों में मैंने पुनः कई बार सुना था, लेकिन सुना था तो थोड़ा अंतर था, कृष्ण की जगह श्याम उच्चारण का प्रयोग किया गया है -

चाहे राम कहो चाहे श्याम कहो...।
दोनों का मतलब एक ही है...।।

राम और कृष्ण को समर्पित मिश्रित भजन भगवान विष्णु के दोनों अवतारों की एकता को दर्शाते हैं। राम और कृष्ण भक्ति के संयुक्त भजन उक्त भजन के साथ-साथ और भी बहुत से मैंने सुने जो कि प्रायः मंदिरों, घरों व धार्मिक आयोजनों आदि में सुनाई देते रहते हैं, प्रमुख भजनों में "कभी राम बनके, कभी श्याम बनके", "जग में सुंदर हैं दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम", और "राम नाम लड्डू, गोपाल नाम घी" शामिल हैं, जो दोनों रूपों को पूजते हैं। ये भक्ति गीत दोनों अवतारों में कोई भेद नहीं मानते। प्रमुख मिश्रित भजन और उनके बोल जो कि इस प्रकार से हैं-

- **कभी राम बनके, कभी श्याम बनके:**
  "कभी राम बनके कभी श्याम बनके, चले आना प्रभु जी चले आना"।
- **जग में सुंदर हैं दो नाम:**
  "जग में सुंदर हैं दो नाम, चाहे कृष्ण कहो या राम।
  बोलो राम राम राम, बोलो श्याम श्याम श्याम"।
- **राम नाम लड्डु, गोपाल नाम घी:**
  "राम नाम लड्डू, गोपाल नाम घी।
  हरि नाम मिश्री, जो खाए सो सुखी"।
- **राम सुमिर के रहम करैना:**
  "राम सुमिर के रहम करैना, फिर कैसे सुख पाएगा।
  कृष्ण सुमिर के कर्म करैना, यूं ही जग से जाएगा"।
- **चाहे राम कहो या श्याम (अथवा कृष्ण) कहो:**
  "चाहे राम कहो या श्याम (अथवा कृष्ण) कहो, दोनों का मतलब एक ही है"।

उक्त भजनों में राम (त्रेता युग) और कृष्ण (द्वापर युग) के स्वरूपों को एक ही दिव्य सत्ता माना गया है।
'राघवयादवीयम्' ग्रंथ के विषय में मैंने कुछ विद्वानों जिसमें पुजारी, महंत व धार्मिक कार्यों से जुड़े हिंदू धर्म के लोग थे उनसे प्रश्न पूछे। जिनसे मैंने सामान्य चर्चा की और चर्चा में पाया कि उनके और मेरे जबाव व प्रश्नों में प्रायः समानता ही रहती, चर्चा के सामान्य प्रश्नोत्तर के केंद्रित वार्तालाप बिंदु इस प्रकार है कि-

मैं- राम-राम पंडित जी

महंत जी- राम-राम जी, राम-राम।

मैं- पंडित जी मेरे मन में एक सवाल है, आपसे पूछ सकता हूँ?

महंत जी - हाँ-हाँ, पूछो जी।

मैं- क्या आप किसी ऐसे ग्रंथ के विषय में सोच सकते हैं, जिसे आप सीधे पढ़े तो कुछ और अर्थ निकले और अगर उल्टा पढ़ें तो कोई और अर्थ?

महंत जी- ग्रन्थ को तो छोड़िये, ऐसा केवल एक श्लोक भी बनाना अत्यंत कठिन है।

मैं- क्या आपको पता है कि एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमें एक नहीं बल्कि 30 श्लोक इस प्रकार लिखे गए हैं जिसे अगर आप सीधा पढ़ें तो रामकथा बनती है और उसी को अगर आप उल्टा पढ़ें तो कृष्णकथा? (तो सुनने वालों के लिए यह जिज्ञासा का कारण बन जाता)।

महंत जी- क्या सच में ऐसी कोई रचना है?

मैं- जी हाँ, ऐसा अद्भुत ग्रन्थ हमारे भारत में ही है। उस ग्रन्थ का नाम है राघवयादवीयम्, जो स्वयं राघव (श्रीराम) और यादव (श्रीकृष्ण) के योग से बना है। इसे "अनुलोम-विलोम काव्य" भी कहा जाता है। इस ग्रन्थ को श्री

वेंकटाध्वरि ने 17वीं सदी में रचा था। इनका जन्म कांचीपुरम के एक गाँव अरसनीपलै में हुआ था। इन्होने कुल 14 रचनाएँ लिखी हैं जिनमे से "राघवयादवीयम्" और "लक्ष्मीसहस्त्रम्" सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। ऐसी किवदंती है कि वेंकटाध्वरि नेत्रहीन थे किन्तु जैसे ही इन्होने लक्ष्मीसहस्त्रम् रचना समाप्त की, माँ लक्ष्मी की कृपा से इन्हे इनकी नेत्रों की ज्योति पुनः प्राप्त हो गयी। वैसे तो इस "राघवयादवीयम्" में ग्रन्थ में केवल 30 श्लोक हैं किन्तु अगर हम श्रीराम और श्रीकृष्ण की कथाओं का अलग अलग वर्णन करें तो श्लोकों की कुल संख्या 60 हो जाती है।

महंत जी - ये ग्रन्थ संस्कृत भाषा में लिखा गया है।

मैं- संस्कृत भाषा में।

महंत जी- शब्दों का ऐसा अद्भुत ताना बाना केवल संस्कृत में ही बुना जा सकता है। अब तो संस्कृत के विद्वान ही विलुप्त होते जा रहे हैं।

पुष्टि के लिए वे कवि के बारे में जानने की जिज्ञासा करते हैं।

महंत जी- ऐसे कौन से कवि हैं जो ऐसी सुंदर रचना कर चुके हैं?

मैं- 'राघवयादवीयम्' अद्भुत रचना को रचने वाले कवि श्री वेंकटाध्वरि का जन्म कांचीपुरम के एक गांव अरसनीपलै में हुआ था। इन्होंने कुल 14 रचनाएं लिखी हैं जिनमें से "राघवयादवीयम्" और "लक्ष्मीसहस्त्रम्" इनकी सर्वाधिक प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। वेंकटाध्वरि श्री वेदांत देशिक के शिष्य थे जिन्होंने इनको शास्त्रों की शिक्षा दी। वेदांत देशिक ने ही श्री रामनुजमाचार्य द्वारा स्थापित रामानुज सम्प्रदाय को वेडगलई गुट के द्वारा आगे बढ़ाया। बचपन में ही दृष्टि दोष से बाधित होने के बावजूद वे मेधावी वकुशाग्र बुद्धि के धनी थे। उन्होंने वेदान्त देशिक का, जिन्हें वेंकटनाथ (1269–1370) के नाम से भी जाना जाता है तथा जिनकी "पादुका सहस्त्रम्" नामक रचना चित्रकाव्य की अनुपम् भेंट है, अनुयायी बन काव्यशास्त्र में महारत हासिल कर 14 ग्रंथों की रचना की, जिनमें 'लक्ष्मीसहस्त्रम्' सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। ऐसा कहते हैं कि इस ग्रंथ की रचना पूर्ण होते ही उनकी दृष्टि उन्हें वापस प्राप्त हो गयी थी।

महंत जी - ग्रंथ 'राघवयादवीयम्' के बारे में कृपया और बताइए?

मैं : दक्षिण भारत में एक अति दुर्लभ ग्रंथ है जिसे 17वीं शदी के कवि वेंकटाध्वरि द्वारा लिखा गया है। उस ग्रंथ का नाम है- राघवयादवीयम्। राघव यादवीयं नाम से बहुत ही छोटा-सा यह ग्रंथ श्रीराम और श्रीकृष्ण की गाथा कहता है, लेकिन इसकी यह खासियत नहीं हैं। यह अन्य कारणों से दुर्लभ और आश्चर्यजनक ग्रंथ माना जाता है। दरअसल, इस ग्रंथ को यदि आप सीधा पढ़ते हैं तो राम कथा पढ़ी जाएगी और यदि इसे उल्टा पढ़ते हैं तो श्रीकृष्ण कथा पढ़ी जाएगी। इस तरह से इस ग्रंथ को लिखा सचमुच बहुत ही रोचक, अद्भुत, आश्चर्य, दुष्कर और दुर्लभ है। पुस्तक के नाम से भी यह प्रदर्शित होता है, राघव (राम) + यादव (कृष्ण) के चरित को बताने वाली गाथा है- "राघवयादवीयम।" इस ग्रन्थ को 'अनुलोम-विलोम काव्य' भी कहा जाता है। अनुलोम विलोम अर्थात योग में प्राणायाम करते वक्त श्वास को अंदर लेना अनुलोम और छोड़ना विलोम है। इस संपूर्ण ग्रंथ में मात्र 30 श्लोक है। तीन श्लोकों में संपूर्ण रामायण और श्री कृष्ण का संपूर्ण जीवन परिचय समाया हुआ है। इन श्लोकों को सीधे-सीधे पढ़ते जाएं, तो श्री हरि राम की कथा बनती है और विपरीत क्रम में पढ़ने पर श्री कृष्ण कथा बनती है। वैसे तो इसमें मात्र 30 ही श्लोक है लेकिन उल्टेक्रम को भी मिला दें तो 60 श्लोक बनेंगे।

महंत जी- आपने अच्छी जानकारी दी. मैं इसके विषय में भक्तों से अवश्य सत्संग करूँगा, धन्यवाद।

मैं- राम-राम पंडित जी

महंत जी- राम-राम जी, राम-राम।

(महंत जी 'राघवयादवीयम्' ग्रंथ पर किससे और क्या सत्संग करेंगे पता नहीं किंतु इतना अवश्य है कि महंत जी के मन में जो 'राघवयादवीयम्' ग्रंथ की जिज्ञासा का जो कीतूहल था वह किसी ना किसा लक्ष्य को अवश्य ही प्राप्त करेगा।)

'राघवयादवीयम्' रचना में उल्लेखित कुछ श्लोकों का निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा रहा है, जो कि राम-कृष्ण की भक्ति को एक साथ प्रस्तुत करते हैं। यह ग्रंथ सनातन सभ्यता के एक कवि की उत्तम भक्ति रचना को आपके समक्ष प्रस्तुत करता है। जिसमें संस्कृत के मूल श्लोक को हिंदी भाषा में अनुवादके साथ प्रस्तुत किया जा रहा है।

"राघवयादवीयम्" ग्रंथ में भक्ति की महानता को निम्नलिखित उदाहरण के तौर पर प्रस्तुत किया गया है जो इस प्रकार हैः

- **पहला श्लोक-** अनुलोम (रामकथा)-

वंदेऽहं देवं तं श्रीतं रन्तारं कालं भासा यः।
रामः रामाधीः आप्यागः लीलाम् आर अयोध्ये वासे ॥ 1॥

अर्थात: मैं उन भगवान श्रीराम के चरणों में प्रणाम करता हूं जिन्होंने अपनी पत्नी सीता के संधान में मलय और सहयाद्री की पहाड़ियों से होते हुए लंका जाकर रावण का वध किया तथा अयोध्या वापस लौट दीर्घ काल तक सीता संग वैभव विलास संग वास किया।

विलोम (कृष्णकथा)-

सेवाध्येयो रामालाली गोप्याराधी मारामोराः।
यस्साभालंकारं तारं तं श्रीतं वन्देऽहं देवम् ॥ 1॥

अर्थात: मैं भगवान श्रीकृष्ण, जो तपस्वी व त्यागी हैं, रुक्मिणी तथा गोपियों संग क्रीड़ारत रहते हैं, गोपियों के पूज्य हैं, के चरणों में प्रणाम करता हूं। जिनके हृदय में मां लक्ष्मी विराजमान हैं तथा जो शुभ्र आभूषणों से मंडित हैं।

मनोभाषिकता- कवि द्वारा एक ही रचना में दो आराध्य देवों की भक्ति एवं आस्था को प्रस्तुत कर रचना का शुभारंभ किया है। साथ ही अपनी प्रखर व श्रेष्ठ बुद्धि से राम-कृष्ण को महिमामंडित भी किया है। साथ ही भगवान श्रीराम के साथ माता सीता तथा भगवान श्रीकृष्ण के साथ रुक्मिणी का विनम्र अभिवादन किया है।

उक्त के अनुसार ही "राघवयादवीयम्" में उदाहरण के तौर पर दूसरा श्लोक हैः

- **दूसरा श्लोक-** अनुलोम (रामकथा)-

साकेताख्या ज्यायामासीत् या विप्रादीप्ता आर्याधारा।
पूः आजीत अदेवाद्याविश्वासा अग्र्या सावाशारावा ॥ 2॥

अर्थात: पृथ्वी पर साकेत अर्थात अयोध्या नामक एक नगर था जो वेदों में निपुण ब्राह्मणों तथा वणिको के लिए प्रसिद्द था। ये अज के पुत्र दशरथ का धाम था एवं यहाँ होने वाले यज्ञों में अर्पण को स्वीकार करने के लिए देवता भी सदा आतुर रहते थे। यह विश्व के सर्वोत्तम नगरों में श्रेष्ठ था।

विलोम (कृष्णकथा)-

वाराशावासाग्र्या साश्वाविद्यावादेताजीरा पूः।
राधार्यप्ता दीप्रा विद्यासीमा या ज्याख्याता के सा ॥ 2॥

अर्थात: समुद्र के मध्य में अवस्थित, विश्व के स्मरणीय नगरों में से एक द्वारका नगर था जहाँ अनगिनत हाथी-घोड़े थे। ये अनेकों विद्वानों के वाद-विवाद की प्रतियोगिता स्थली थी, ये आध्यात्मिक ज्ञान का प्रसिद्द केंद्र था एवं जहाँ राधास्वामी श्रीकृष्ण का निवास था।

मनोभाषिकता- कवि ने इस रचना में भगवान श्रीराम के साथ अयोध्या नगरी की खूबियों का बखान किया है। तो वहीं वहीं समुद्र के बीच बनी भगवान श्रीकृष्ण की नगरी द्वारिका की सुंदरता की व्याख्या को सुंदर रूप में प्रस्तुत किया है।

- **आठवाँ श्लोक-** अनुलोम (रामकथा)-

सारसासमधात अक्षिभून्ना धामसु सीतया।
साधु असौ इह रेमे क्षेमे अरम् आसुरसारहा ॥ 8॥

अर्थात: समस्त आसुरी सेना के विनाशक, सौम्यता के प्रतीक एवं प्रभावशाली नेत्रधारी रक्षक राम अपने अयोध्या निवास में सीता संग सानंद रह रहे है थे।

विलोम (कृष्णकथा)

हारसारसुमा रम्यक्षेमेर इह विसाध्वसा।

य अतसीसुमधाम्ना भूक्षिता धाम ससार सा ॥ 8॥

अर्थात: अपने गले में मोतियों के हार जैसे पारिजात पुष्पों को धारण किए हुए, प्रसन्नता व परोपकार की अधिष्ठात्री, निर्भीक रुक्मिणि आतशी पुष्पधारी कृष्ण संग निज गृह को प्रस्थान कर गयी।

मनोभाषिकता- कवि ने इस श्लोक में भगवान श्रीराम और भगवान श्री कृष्ण को दांपत्य जीवन की छठा को दृष्टिपात किया है। कवि ने एक ओर जहाँ भगवान राम संग माता सीता के गुणों का बखान किया है, वहीं दूसरी ओर श्रीकृष्ण के रूप एवं वस्त्रों आदि सहित रुक्मिणि को सुशोभित किया है।

- **नवाँ श्लोक-** अनुलोम (रामकथा)

सागसा भरताय इभमाभाता मन्युमत्तया।

स अत्र मध्यमय तापे पोताय अधिगता रसा ॥ 9॥

अर्थात: पाप से परिपूर्ण कैकेयी अपने पुत्र भरत के लिए क्रोधाग्नि से विक्षिप्त हो तप रही थी। लक्ष्मी की कान्ति से उज्जवलित धरती (अयोध्या) को उस मध्यमा (मझली पत्नी) ने पापी विधि से अपने पुत्र भरत के लिए ले लिया।

विलोम (कृष्णकथा)

सारतागधिया तापोपेता या मध्यमत्रसा।

यात्तमन्युमता भामा भयेता रभसागसा ॥ 9॥

अर्थात: सूक्ष्मकटि (पतले कमर वाली), अति विदुषी सत्यभामा, श्रीकृष्ण द्वारा उतावलेपन में पारिजात पुष्प रुक्मिणी को देने से उसे भेदभावपूर्वक जानकर आहत होकर क्रोध और घृणा से भर गई।

मनोभाषिकता- कवि ने इस श्लोक में कैकयी की स्थिति का एवं उसके मानसिक विकारों का प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, वहीं दूसरी ओर कवि ने सत्यभामा के मानसिक विकारों को प्रस्तुत किया है।

- **तेरहवाँ श्लोक-** अनुलोम (रामकथा)

रागिराधुतिगर्वादारदाहः महसा हह।

यान् अगात भरद्वाजम् आयासी दमगाहिनः ॥ 13॥

अर्थात: तामसी, उपद्रवी, दम्भी एवं अनियंत्रित शत्रुदल को अपने तेज से दहन करने वाले शूरवीर राम के निकट भारद्वाज आदि संयमी ऋषिगण थकान एवं क्लांत रूप में पँहुच कर याचना की।

विलोम (कृष्णकथा)

नो हि गाम् अदसीयामाजत् व आरभत गा; न या।

हह सा आह महोदारदार्वागतिधुरा गिरा ॥ 13॥

अर्थात: सत्यभामा ने पुष्पधारी श्रीकृष्ण के शब्दों पर ना तो ध्यान दिया और ना ही कुछ बोली जब तक कि श्रीकृष्ण ने पारिजात वृक्ष को लाने का संकल्प नहीं कर लिया।

मनोभाषिकता- कवि ने इस श्लोक में एक ओर भगवान राम के पास ऋषियों के पहुँचने एवं याचना को प्रस्तुत किया है, वहीं दूसरी ओर भगवान श्रीकृष्ण का सत्यभामा के प्रति पारिजात वृक्ष के संकल्प पर दृष्टिपात किया है।

- **चौदहवाँ श्लोक-**अनुलोम (रामकथा)

यातुराजिदभाभारं द्यां व मारुतगन्धगम्।

सः अगम् आर पदं यक्षतुंगाभः अनघयात्रया ॥ 14॥

अर्थात: अपने तेज एवं प्रताप से असंख्य राक्षसों का नाश करने वाले श्रीराम स्वर्गतुल्य सुगन्धित पवन संचारित स्थल (चित्रकूट) पर यक्षराज कुबेर तुल्य वैभव व आभा संग लिए पंहुचे।

विलोम (कृष्णकथा)

यात्रया घनभः गातुं क्षयदं परमागसः।

गन्धगं तरुम् आव द्यां रंभाभादजिरा तु या ॥ 14॥

अर्थात: मेघवर्ण के श्रीकृष्ण सत्यभामा को उनके द्वारा किये गए अन्याय द्वारा जन्में घोर उपेक्षा को शांत करने हेतु अप्सराओं द्वारा शोभायमान एवं रम्भा जैसी सुंदरियों से जगमगाते स्वर्ग को गए ताकि वे सुगन्धित पारिजात वृक्ष तक पहुँच सकें।

मनोभाषिकता- कवि ने इस श्लोक में भगवान श्रीराम के चित्रकूट प्रस्थान को जहाँ एक ओर अनूठे ढंग से प्रस्तुत किया है। वहीं दूसरी ओर सत्भामा को मनाने व पारिजात वृक्ष के लिए स्वर्ग तक जाने की स्थिति का वर्णन करते हैं।

- **सत्रहवाँ श्लोक-** अनुलोम (रामकथा)

सागमाकरपाता हाकंकेनावनतः हि सः।

न समानर्द मा अरामा लंकाराजस्वसा रतम् ॥ 17॥

अर्थात: वेदों में निपुण एवं सन्तों के रक्षक श्रीराम को गरुड़ (जटायु) ने झुक कर नमन किया। वो श्रीराम जिनके प्रति स्वयं लंकेश की बहन (शूर्पणखा) ने भी काम याचना की थी।

विलोम (कृष्णकथा)

तं रसासु अजराकालं म आरामार्दनम् आस न।

स हितः अनवनाकेकं हाता अपारकम् आगसा ॥ 17॥

अर्थात: वे (श्रीकृष्ण), जो वृद्धावस्था व मृत्यु से परे थे, पारिजात वृक्ष की प्राप्ति की इच्छा से स्वर्ग गए। तब इंद्र जो कृष्ण के हितैषी थे, उन्हें स्वर्ग में रहते हुए भी अपार दुःख प्राप्त हुआ।

मनोभाषिकता- कवि ने इस श्लोक में एक ओर भगवान श्रीराम को जटायु एवं शूर्पणखा के माध्यम से परिभाषित किया है तो वहीं दूसरी ओर भगवान श्री कृष्ण के इंद्र के मिलन व उनकी मनोभाषिक दशा के संबंध में वर्णन प्रस्तुत किया है।

- **इक्कीसवाँ श्लोक-** अनुलोम (रामकथा)

ताटकेयलवादत् एनोहारी हारिगिर आस सः।

हा असहायजना सीता अनाप्तेना अदमनाः भुवि ॥ 21॥

अर्थात: ताड़कापुत्र मारीच के वध से प्रसिद्ध, अपनी वाणी से पाप का नाश करने वाले तथा जो अत्यंत मनभावन है, उनकी हाय सुनकर (मृगरूपी मारीच द्वारा श्रीराम के स्वर में सीता को पुकारने पर) असहाय सीता अपने उस स्वामी श्रीराम के बिना व्याकुल हो गईं।

विलोम (कृष्णकथा)

विभुना मदनाप्तेन आत आसीनाजयहासहा।

सः सराः गिरिहारी ह नो देवालयके अटता ॥ 21॥

अर्थात: प्रद्युम्न संग देवलोक में विचरण कर रहे कृष्ण को रोकने में जयंत के पिता, अथाह संपत्ति के स्वामी एवं पर्वतों को अपनी शक्ति से झुका देने वाले इंद्र असमर्थ हो गए।

मनोभाषिकता- कवि ने इस श्लोक में एक ओर भगवान श्रीराम द्वारा मारीच वध प्रसंग का वर्णन प्रस्तुत किया है तो वहीं दूसरी ओर इंद्र और कृष्ण के शक्ति प्रदर्शन पर वैचारिकता को व्यक्त किया है।

- **सत्ताइसवाँ श्लोक-** अनुलोम (रामकथा)

वीरवानरसेनस्य त्रात अभात् अवता हि सः।

तोयधो अरिगोयादसि अयतः नवसेतुना ॥ 27॥

अर्थात: वीर वानर सेना के त्राता के रूप में विख्यात श्रीराम उस महान सेतुसमुन्द्र पर चलने लगे जो अथाह विस्तृत सागर के जीव-जंतुओं से भी उनकी रक्षा कर रहा था।

विलोम (कृष्णकथा)

ना तु सेवनतः यस्य दयागः अरिवधायतः।

स हि तावत् अभत त्रासी अनसेः अनवारवी ॥ 27॥

अर्थात: जो व्यक्ति प्रभु हरि की सेवा में रत रहते हुए उनका यशगान करता है वह प्रभु की दया प्राप्त कर शत्रुओं पर विजय पाता है। जो ऐसा नहीं करता है वह निहत्थे शत्रु से भी भयभीत होकर कान्तिविहीन हो जाता है।

मनोभाषिकता- कवि ने इस श्लोक में जहाँ एक ओर रामसेतु पर राम सेना के प्रस्थान संबंधी प्रसंग को प्रस्तुत किया है। वहीं, दूसरी ओर प्रभु और भक्तों के संबंध और प्रभु कृपा के आधार पर विचार प्रस्तुत किया है।

- **अट्ठाइसवाँ श्लोक-**अनुलोम (रामकथा)

हारिसाहसलंकेनासुभेदी महितः हि सः।

चारुभूतनुजः रामः अरम् आराधयदार्तिहा ॥ 28॥

अर्थात: चमत्कारिक रूप से साहसी उन श्रीराम द्वारा रावण के प्राण हरने पर देवताओं ने उनकी स्तुति की। वे रूपवती भूमिजा सीता के संगी हैं तथा शरणागतों का कष्ट निवारण करते हैं।

विलोम (कृष्णकथा)

हा आर्तिदाय धराम् आर मोराः जः नुतभूः रुचा।

सः हितः हि मदीभे सुनाके अलं सहसा अरिहा ॥ 28॥

अर्थात: वे (श्रीकृष्ण) जो लक्ष्मी को निज वक्षस्थली में रखते हैं, जो कीर्तियों के शरणस्थल हैं और जो प्रद्युम्न के हितैषी हैं अपने पुत्र (प्रद्युम्न) को युद्ध के कष्टों से उबारने के पश्चात ऐरावत वाले स्वर्गलोक को जीत कर पृथ्वी को वापस लौट आए।

मनोभाषिकता- कवि ने इस श्लोक में जहाँ एक ओर भगवान श्री राम द्वारा रावण वध पर देवताओं की स्तुति को प्रस्तुत किया है तो वहीं दूसरी ओर भगवान श्री कृष्ण की स्वर्गलोक विजय यात्रा पर दृष्टिपात किया है।

- **उन्नतीसवाँ श्लोक-** अनुलोम (रामकथा)

नालिकेर सुभाकारागारा असौ सुरसापिका।

रावणारिक्षमेरा पूः आभेजे हि न न अमुना ॥ 29॥

अर्थात: नारियल के वृक्षों से आच्छादित एवं रंग-बिरंगे भवनों से निर्मित अयोध्या नगर अब रावण को पराजित करने वाले श्रीराम का समुचित निवास स्थल बन गया।

विलोम (कृष्णकथा)

ना अमुना नहि जेभेर पूः आमे अक्षरिणा वरा।

का अपि सारसुसौरागा राकाभासुरकेलिना ॥ 29॥

अर्थात: अनेकों विजयी गजराजों वाली भूमि द्वारका नगर में धर्म के वाहक सताप्रिय कृष्ण का प्रवेश क्रीडारत गोपियों के संग दिव्य वृक्ष पारिजात के साथ हुआ।

मनोभाषिकता- कवि ने इस श्लोक में जहाँ एक ओर भगवान श्रीराम का अयोध्या नगरी के वैभव को प्रस्तुत किया है, वहीं दूसरी ओर भगवान श्रीकृष्ण की द्वारिका के सौंदर्य जिसमें गोपियों, पारिजात आदि का वर्णन प्रस्तुत किया है।

- **तीसवाँ श्लोक-** अनुलोम (रामकथा)

सा अग्र्यतामरसागाराम् अक्षामा घनभा आर गौः।

निजदे अपरजिति आस श्रीः रामे सुगराजभा ॥ 30॥

अर्थात: अयोध्या का समृद्ध स्थल तामरस (कमल) पर विराजमान राज्यलक्ष्मी का सर्वोत्तम निवास बना। सर्वस्व न्योछावर करानेवाले अजेय श्रीराम के प्रतापी शासन का उदय हुआ।

विलोम (कृष्णकथा)

भा अजराग सुमेरा श्रीसत्याजिरपदे अजनि।

गौरभा अनघमा क्षामरागा स अरमत अग्र्यसा ॥ 30॥

अर्थात: सत्यभामा के आँगन में अवस्थित पारिजात में पुष्प प्रस्फुटित हुए। सत्यभामा इस निर्मल संपत्ति को पाकर श्रीकृष्ण की प्रथम भार्या रुक्मिणी के प्रति इर्ष्याभाव का त्याग श्रीकृष्ण संग सुखपूर्वक रहने लगी।

मनोभाषिकता- कवि ने इस श्लोक में जहाँ एक ओर भगवान श्रीराम के रामराज्य की शोभा को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है तो वहीं दूसरी ओर भगवान श्रीकृष्ण के द्वारिका में सुखपूर्वक निवास का वर्णन प्रस्तुत किया है।

अतः कवि ने अपनी एक रचना में दो देवों की आराधना को प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष- सनातन धर्म में भगवान श्रीराम और भगवान श्री कृष्ण दोनों का मतलब एक होने की बात हमारे धर्म, समाज व दिमाग में रहती आई है, इसका एक कारण मेरे व्यक्तिगत रूप से शायद हिंदू होने का भी हो सकता है क्योंकि हम श्रीराम और श्रीकृष्ण की भक्ति कथाओं को सदैव से सुनते आए हैं। लेकिन कथाएँ दोनों की अलग होने के कारण एक संशय मन में रहता ही है कि राम और कृष्ण दोनों का मतलब एक कैसे को सकता है? हालांकि दोनों एक हों या ना हों, लेकिन एक-दूसरे की समानता का विचार तो मन में था ही। भक्ति की प्रबलता में वह विचार मन के भीतरी हिस्से में एक प्रश्न की भाँति था। कभी भी मन के इस कौने पर कोई रचना, नाटक, पुस्तक, कहानी आदि संपर्क में ना आने से यह मुद्दा अछूता ही रहा। किंतु अचानक एक राम-कृष्ण की संयुक्त भक्ति की रचना 'राघवयादवीयम्' नामक ग्रंथ ने मुझे इस सत्य की सार्थकता से रूबरू करा दिया और मेरी समझ में आ गया कि भक्ति भावना के समर्पण भावनात्मक दृष्टिकोण से ही भगवान श्री राम और भगवान श्री कृष्ण दोनों का मतलब एक ही है। सनातन धर्म के कार्यक्रमों व भक्ति प्रसंगों आदि के भजनों में प्रायः महिलाओं व पुरुषों द्वारा कई बार राम और कृष्ण भक्ति के अलग-अलग भजन सुनाई दे जाते हैं, यह भजन उनकी लोक भाषा व लोकगीतों में भी होते हैं, जो शायद इनके खुद के द्वारा ही तैयार किए हुए होते हैं। किंतु अब यदि कोई भगवान श्री राम व भगवान श्री कृष्ण के संयुक्त भक्ति भजन, गायन व कीर्तन करता मिलेगा तो निश्चित ही मेरी गिनती में बढ़ोतरी करने में सहायक सिद्ध होगा।

संदर्भ :

1. 'राघवयादवीयम्' (हिंदी में)
2. https://www.mahakavya.com/raghavyadviyam-hindi/#%E0%A4%85%E0%A4%A8%E0%A5%81%E0%A4%B2%E0%A5%8B%E0%A4%AE%E2%80%93%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%B2%E0%A5%8B%E0%A4%AE
3. https://www.google.com/search?q=%E0%A4%B0%E0%A4%BE%E0%A4%AE+%E0%A4%94%E0%A4%B0+%E0%A4%95%E0%A5%83%E0%A4%B7%E0%A5%8D%E0%A4%A3+%E0%A4%95%E0%A5%87+%E0%A4%AE%E0%A4%BF%E0%A4%B6%E0%A5%8D%E0%A4%B0%E0%A4%BF%E0%A4%A4+%E0%A4%AD%E0%A4%9C%E0%A4%A8&oq=&aqs=chrome.4.35i39i362l8.34966j0j7&sourceid=chrome&ie=UTF-8
4. https://ia803403.us.archive.org/4/items/raghav-yadaviyam-by-Venkatadhwari/Full.pdf
5. इंटरनेट साभार